भारत में समाजशास्त्र का विकास

(Development of Sociology in India)

डॉ. अनुराग कुमार पाण्डेय

सहायक प्रोफेसर

समाजशास्त्र विभाग

जे. एस. हिन्दू (पी. जी.) कॉलेज, अमरोहा

समाजशास्त्र

समाज के अध्ययन के रूप में	गिडिंग्स, समनर, वार्ड, जिसबर्ट, ओडम आदि
सामाजिक संबंधों के अध्ययन के रूप में	मैकाइवर व पेज, क्यूबर, मैक्स वेबर, वानवीज, अर्नोल्ड एम. रोज, सीमेल, ग्रीन, सोरोकिन आदि
सामाजिक समूहों के अध्ययन के रूप में	जॉनसन, नोब्स, हाइन व फ्लिमिंग आदि
सामाजिक अंत:क्रियाओं के अध्ययन के रूप में	गिलिन एवं गिलिन, जिंसबर्ग, सीमेल, मैक्स वेबर, फेयरचाइल्ड आदि

भारत में समाजशास्त्र का विकास

रामकृष्ण मुखर्जी: भारतीय समाजशास्त्र के ऐतिहासिक विकास के तीन चरण

- समाजशास्त्र का आदि (आरंभिक) व्यावसायिक चरण: 20वीं सदी से पूर्व
- वर्णनात्मक तथा व्याख्यात्मक समाजशास्त्र का व्यावसायिक चरण: 20वीं सदी में
- वर्तमान में नैदानिक समाजशास्त्र के आवश्यक चरण

भारत में समाजशास्त्र का विकास

- **1773–1900:** समाजशास्त्र की नींव
- **1901–1950:** व्यावसायिक समाजशास्त्र (स्वतंत्रता से पूर्व)
- **1951 से वर्तमान तक:** स्वतंत्रता के पश्चात
  - सत्तर के दशक में विकास
  - अस्सी के दशक में परिप्रेक्ष्य
  - नब्बे के दशक में क्रियात्मक स्वरूप

1773–1900 ई.: समाजशास्त्र की नींव

- समाजशास्त्र के तौर पर व्याख्या, वर्णन तथा तथ्यों के संकलन का दौर
- ज्ञान की विशिष्ट शाखा के रूप में प्रयोग नहीं
- सरकारी रिपोर्ट तथा सर्वेक्षण के रूप में समाजशास्त्र
  - भारत–विद्या (Indology)
  - आर्थिक–सामाजिक अध्ययन
- भारत में पुनर्जागरण: भारतीय धर्म व मूल्यों, प्रथा तथा संस्थाओं की पुनर्व्याख्या

1901–1950 ई.: व्यावसायिक समाजशास्त्र (स्वतंत्रता से पूर्व)

- **औपचारिक प्रतिस्थापन युग** (1914–1947)
- 1914: बम्बई विश्वविद्यालय

  1919: विभाग के रूप में (पैट्रिक गेड्स) 1924: जी. एस. घुर्ये

  एन. के. टूथी
- 1917: कलकत्ता विश्वविद्यालय (ब्रजेन्द्र नाथ शील)

  राधाकमल मुखर्जी, बी. के. सरकार, के. पी. चट्टोपाध्याय, निर्मल कुमार बोस
- 1921: लखनऊ विश्वविद्यालय (राधाकमल मुखर्जी)

  डी. पी. मुखर्जी, ए. के. सरन, डी. एन. मजूमदार
- 1923: मैसूर विश्वविद्यालय (ए. आर. वाडिया)
- 1930: डेक्कन कॉलेज, पूना विश्वविद्यालय (इरावर्ती कर्वे)
- 1946: उस्मानिया विश्वविद्यालय (एस. सी. दुबे)

  क्रिस्टोफ वॉन हाईमडॉर्फ

1951 से वर्तमान तक: स्वतंत्रता के पश्चात

- **पंच वर्षीय योजना**, भारत सरकार: विकास के सामाजिक पहलू, इसके निर्धारक और परिणाम
- **जी. एस. घुर्ये:** Indian Sociological Society (1952)

  Sociological Bulletin (1952)
- **लुईस ड्यूमा एवं डी. एफ़. पोकॉक:** Contribution to Indian Sociology (1957)

- **TISS (Tata Institute of Social Sciences), Mumbai**
- **J. K. Institute of Sociology & Social Work, Lucknow**
- **Institute of Social Sciences, Agra**

1951 से वर्तमान तक: स्वतंत्रता के पश्चात

- **सत्तर के दशक में विकास**

  प्रकार्यवादी परिप्रेक्ष्य के साथ मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्य का प्रयोग

- **अस्सी के दशक में परिप्रेक्ष्य**

  विचलन का समाजशास्त्र, ज्ञान का समाजशास्त्र, विज्ञान एवं तकनीकी का समाजशास्त्र, विकास का समाजशास्त्र, व्यवसाय का समाजशास्त्र, संगठन का समाजशास्त्र, ऐतिहासिक समाजशास्त्र

- **नब्बे के दशक में क्रियात्मक स्वरूप**

  सामाजिक, संस्कृति, आर्थिक व राजनैतिक परिवर्तन

  क्रियाशील समाजशास्त्र

भारतीय समाजशास्त्र के परिप्रेक्ष्य

- **ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य:** डी. पी. मुखर्जी, ए. आर. देसाई, राधाकृष्ण मुखर्जी
- **भारत विद्याशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य:** जी. एस. घुर्ये, लुईस ड्यूमा, राधाकमल मुखर्जी, एस. वी. केतकर, बी. एन. शील, बी. के. सरकार, के. एम. कपाड़िया, पी. एच. प्रभु, इरावती कर्वे
- **संरचनात्मक-प्रकार्यवादी परिप्रेक्ष्य:** एम. एन. श्रीनिवास, एस. सी. दुबे, मैकिम मैरिएट, आई. पी. देसाई, डी. एन. मजूमदार
- **मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्य:** ए. आर. देसाई, डी. पी. मुखर्जी, राधाकृष्ण मुखर्जी, डी. डी. कोशाम्बी, रामकृष्ण मुखर्जी, डेनियल थर्नर, कैथलिन गफ
- **सभ्यतावादी परिप्रेक्ष्य:** एन. के. बोस, सुरजीत सिन्हा, एल. पी. विद्यार्थी
- **अधीनस्थ परिप्रेक्ष्य:** बी. आर. अंबेडकर, डेविड हार्डिमेन, रणजीत गुहा, कपिल कुमार
- **तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य:** रामकृष्ण मुखर्जी, आंद्रे बेते, योगेन्द्र सिंह, के. एल. शर्मा

Next Class:

अगस्त कॉम्ट: विज्ञानों का संस्तरण

(August Comte: Hierarchy of Sciences)